

Vinoba Bhawe University Hazaribag, Jharkhand

FYUGP (2022-2026)

Model questions in Geography

Major Paper

Full Marks-60

Time-3 Hours

Answer the questions as per instruction given.

(दिए गए निर्देश के अनुसार प्रश्नों का उत्तर दें।)

The figures in the right-hand margin indicate marks.

(दाहिने उपांत में अंक, पूर्णांक को दर्शाते हैं।)

Candidates are required to given answers in their own words as far as practicable.

(परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।)

Group-A

Short answer type Questions. (लघु उत्तरीय प्रश्न)

ANSWER ALL THE FOLLOWING QUESTIONS.

(सभी प्रश्नों के उत्तर दें)

Q1. Very short answer type questions (अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

(05)

i) Which scholar has given the name of geography?

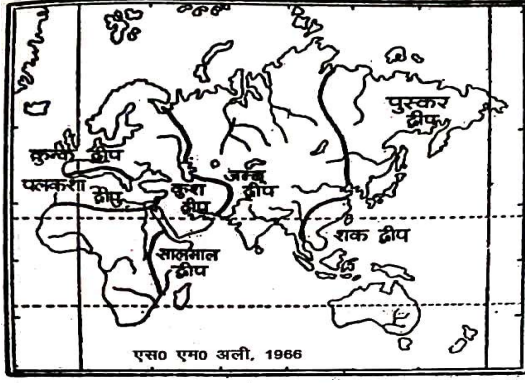
कौन विद्वान भूगोल विषय का नाम "ज्यॉग्राफी" दिये ?

उत्तर— इरेटोस्थनीज (276—194बी.सी.)

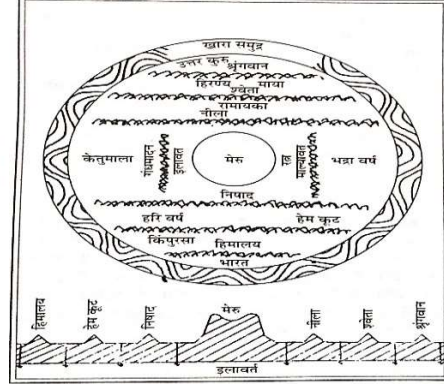
ii) What is 'JAMBU Dwipa' ?

जम्बू द्वीप क्या है ?

उत्तर— यह क्षेत्र पौराणिक काल/समय में वर्णित है। जो इजराइल से चीन और रूस से भारतवर्ष का क्षेत्र तक फैला है। पौराणिक काल में विश्व द्वीप नौ भागों में बांटा जिसे वर्ष (भौगोलिक प्रदेश) कहा गया। उन्हीं वर्षों में से एक वर्ष "भरतवर्ष" है।



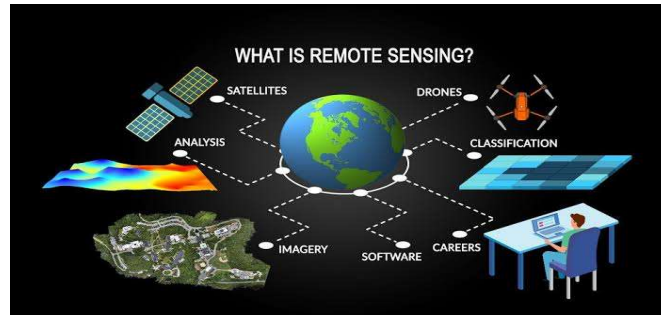
पौराणिक काल में महाद्वीपों की परिकल्पना



iii) What are 'Platforms' in Remote sensing ?

उत्तर— सुदूर संवेदन अनुप्रयोग के लिए 'Sensors' संवेदक को किसी एक निश्चित एवं स्थिर मंच (Platform) पर अवस्थित करने की आवश्यकता होती है। इस मंच को सुदूर संवेदन प्लेटफार्म कहा जाता है। पृथ्वी सतह से ऊंचाई पर सुदूर संवेदन प्लेटफार्म को 3 वर्गों में बांटा गया है—

1. Ground Based (भूमि आधारित)- ex- Tower, Tripode,
2. Airborne (वायु क्षेत्र आधारित)-ex- Aircrafts, Balloon, UAVs
3. Spaceborn(अंतरिक्ष आधारित)-ex- Satellite



iv) What is Determinism?

निश्चयवाद या नियतिवाद क्या है?

उत्तर— निश्चयवाद या नियतिवाद मानव भूगोल के शुरुआती दृष्टिकोणों में से एक है, जिसके अंतर्गत मानव एवं पर्यावरण के अंतर्संबंध को दर्शाया गया है। इसमें पर्यावरण या प्रकृति के मजबूत पक्ष तथा मनुष्य के कमजोर पक्ष के संबंध के रूप में दर्शाया गया है ।

v) Write the names of books written by Hartshorne.

हार्टशोर्न द्वारा लिखित किताबों का नाम दें ?

उत्तर— रिचर्ड हार्टशोर्न (1898–1989 ए.डी.) अमेरिकी भूगोलवेत्ता द्वारा लिखित पुस्तकों के नाम—

1. Nature of Geography (1939)
2. Perspective on the Nature of Geography (1959)

Q2. Write about concept of 'landshaft'. (05)

लैंडशाफ्ट की संकल्पना के बारे में लिखें ।

उत्तर— लैंडशाफ्ट विचारधारा के अनुसार भूगोल के अंतर्गत लैंडशाफ्ट का अध्ययन किया जाता है। लैंडशाफ्ट जर्मन शब्द है, जिसका अर्थ "सादृश्य प्रदेश" होता है। Landschaft अंग्रेजी शब्द Landscape से सर्वथा भिन्न है। Landscape का अर्थ "दृश्यभूमि" होता है, परंतु जर्मन शब्द "लैंडशाफ्ट" का अर्थ दृश्य (Scene) के साथ-साथ "प्रदेश" और उस प्रदेश की विशेषताएं भी सम्मिलित रहती है। जर्मन भूगोलवेत्ताओं ने भूगोल को लैंडशाफ्ट के विज्ञान (Science of Landschaft) के रूप में परिभाषित किया अर्थात् भूगोल प्रदेश का क्रमबद्ध विज्ञान (Systematic Science of region or Landschaften) है एवं इसे भूगोल के केन्द्र के रूप में माना।

जर्मन विद्वान विमर ने 1885 AD में प्रकाशित पुस्तक ऐतिहासिक भूदृश्यों कि भूगोल (Historische Landschaftkunde) में भौगोलिक अध्ययन की एक सर्वथा अलग संकल्पना प्रस्तुत की। जिसे श्लूटर ने 1906 AD में प्रकाशित अपनी एक पुस्तक या लेख Objectives of the Geography of man में पुर्नजीवन प्रदान किया। इस लेख में श्लूटर ने भूगोल की एक नई संकल्पना प्रस्तुत की। जिसके अनुसार दृश्यभूमि के अंतर्गत पृथ्वी की सतह के किसी क्षेत्र के वे सब तत्त्व सम्मिलित किये जाते हैं, जिन्हें ज्ञानेन्द्रियों से समझा जा सकता है। श्लूटर ने आँखों से अनुभूत की जाने दृश्य सत्ता की समष्टि को भूदृश्य अथवा लैंडशाफ्ट नाम दिया।

Q3. What is Radical Geography ? (05)

उग्र सुधारवादी भूगोल क्या है ?

उत्तर— उग्र सुधारवादी भूगोल मुख्य रूप से मानव कल्याण की भावना से ओतप्रोत है। इसमें समाजवादी भूगोल, मार्क्सवादी भूगोल तथा मानववादी भूगोल सम्मिलित हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जब संपूर्ण मानवता संसार के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार की समस्याओं एवं संकटों में फसकर सही त्राहिमाम कर रही थी और दूसरी तरफ भूगोल की मात्रात्मक क्रांति के उभार के बाद अलोकप्रियता के दौर में प्रवेश कर चुकी थी, जबकि दूसरी तरफ आंतरिक्ष- अनुसंधान सदृश अत्यंत ही नूतन अभियानों में विश्व समुदाय संलग्न था। संयुक्त राज्य अमेरिका सदृश विकसित

समुदाय, दक्षिण अफ्रीका रंगभेद की विकट समस्या से जूझ रहा था। वियतनाम, किनिया, इजराइल आदि अशांति एवं युद्ध में बुरी तरह उलझा था। तीसरी दुनिया के एशियाई एवं अफ्रीका देश अकाल, गरीबी एवं भुखमरी से जूझ रहे थे, अर्थात् मानवीय मूल्यों का ह्रास तथा नैतिक पतन जब चरम पर था ठीक उसी समय भूगोल में मानववादी या मानव कल्याणउन्मुखी दृष्टिमुखर होने लगी। यह व्यक्ति के बजाय समाज कल्याण की भावना से प्रेरित रहा। चूंकि इस अवधारणा को मुख्य रूप से समाजवादियों या मार्क्सवादियों ने विकसित किया इसलिए इसे मार्क्सवादी भूगोल भी कहा जाता है।

इस अवधारणा का सर्वप्रथम वर्णन सन् 1970 AD में लंदन से प्रकाशित 'Antipode' नामक पत्रिका में की गई थी। इसी के समकालीन लंदन में प्रकाशित 'Area' नामक अन्य पत्रिका में भी इसका वर्णन हुआ था। तथापि, इस संकल्पना के जनक पेत्र क्रोपोटकिन (1842–1921 AD) को माना जाता है, उन्होंने ही सन् 1921 AD के भी पहले इसका वर्णन एवं विश्लेषण किया था। चूंकि उनके विचारों का प्रकाशन रूसी भाषा में हुई थी इसलिए आंग्ल, जर्मन एवं फ्रेंच भाषी अधिकांश समुदाय इन विचारों से अनभिज्ञ था। लेकिन, जब 1970 AD में अंग्रेजी पत्रिकाओं में इसकी चर्चा शुरू हुई तो तब पेत्र क्रोपोटकिन के अनुयायियों ने उनके विचारों का आंग्ल रूपांतरण विश्व समुदाय के समक्ष प्रस्तुत किया। इस प्रकार पेत्र क्रोपोटकिन को समाजवादी भूगोल की स्थापना का श्रेय प्राप्त हो गया। सन् 1977 AD में लंदन से ही डेविड स्मिथ की 'Human Geography : A Welfare Approach' नामक पुस्तक के प्रकाशन द्वारा इस संकल्पना को काफी बल प्राप्त हुआ। सन् 1990 AD में रिचर्ड पीट एवं थ्रिपट के इस विचार को 'Society is best Understood as Political economy' में प्रकाशन हुआ तब इसे ओर भी ज्यादा मान्यता प्राप्त हुई।

Group-B

Long/Descriptive answer type questions (दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

Answer any three question. (किन्ही तीन प्रश्नों का उत्तर दें)

Q4. Describe the nature and scope of Geography ? (15)

भूगोल की प्रकृति एवं विषय क्षेत्र का वर्णन करें ?

उत्तर— भूगोल दो शब्दों के मेल से बना हुआ है "भू + गोल"। भू का अर्थ "पृथ्वी या भूमि" होता है तथा गोल का अर्थ गोल पृथ्वी का अध्ययन या वर्णन करना है अर्थात् पृथ्वी का अध्ययन करना ही भूगोल कहलाता है। भूगोल शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अलेक्जेंडर वॉल्फ की पुस्तकालय में विद्वानों के द्वारा ईसा से 2300 वर्ष पूर्व किया गया था। भूगोल वह विज्ञान जिसके अंतर्गत पृथ्वी का अध्ययन किया जाता है। भूगोल में पृथ्वी के धरातल के साथ वायुमंडलीय भाग एवं भूतल का अध्ययन है जिसके अंतर्गत सभी महाद्वीप एवं महासागर आदि का अध्ययन किया जाता है।

भूगोल को विकसित करने का श्रेय यूनानी विद्वानों को जाता है। प्रारंभ काल में यह नक्षत्र विज्ञान एवं खगोलीय का ही एक भाग माना जाता था।

वास्तविकता तो यह है कि भूगोल को आधुनिक विज्ञान के रूप में विकसित करने का श्रेय जर्मन विद्वानों को है। जर्मन भूगोलवेत्ता वारेनियस ने 17 वीं शताब्दी में भूगोल के क्रमबद्ध अध्ययन को विशेष महत्व दिया। उसने पहली बार पृथ्वी की सतह तथा उस पर विकसित प्राकृतिक परिवेश के तत्त्व स्थिति, धरातल, जल, मरुस्थल, पशु, वनस्पति, जगत को सम्मिलित ही नहीं बल्कि मानव के विकासशील व सांस्कृतिक तत्त्वों के कारणों यथा— धार्मिक, संस्कृति एवं विशिष्ट मानवीय वृत्तियों जैसे नगर शासन तंत्र आदि को सम्मिलित किया। उसने पृथ्वी की सतह को अध्ययन का केंद्र माना तथा उस पर पाए जाने वाले तत्त्वों का अध्ययन किया। उन्होंने पृथ्वी के निवासियों के शारीरिक लक्षणों, कला, संस्कृति, रहन—सहन आदि को भी आवश्यक माना। उन्होंने लिखा है कि किसी स्थान के निवासियों के मानव मानवीय लक्षणों के अंतर्गत वहां के निवासियों का वर्णन एवं शारीरिक लक्षण, कला, संस्कृति, वाणिज्य, भाषा, धर्म, शासन, नगर, विख्यात, स्थल एवं प्रसिद्ध व्यक्तियों को शामिल किया जाना चाहिए।

18 वीं शताब्दी में प्राकृतिक विज्ञानों का विकास होने लगा जिसमें भूगोल का भी विकास होने लगा। 19वीं शताब्दी में भूगोल की प्रगति का सर्वोत्तम शताब्दी माना जाता है। जर्मन भूगोलवेत्ता इमेनुअल कांट ने भूगोल की अनेक शाखाएं यथा— भौतिक, गणितीय, नैतिक, राजनीतिक, वाणिज्य एवं वातावरण आदि की नींव रखी।

20वीं शताब्दी में भूगोल का विस्तार बड़े पैमाने पर हुआ तथा इसका विभाजन अनेक शाखाओं में होने लगा। जर्मन भूगोलवेत्ता हेटनर ने इसे क्षेत्रीय विज्ञान माना तथा क्षेत्रों के अध्ययन में पृथ्वी एवं मानव दोनों को सम्मिलित माना। उन्होंने भूगोल को दार्शनिक एवं वैज्ञानिक आधार पर स्थापित किया। इसी समय फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता विडाल—डी—ला ब्लाश महोदय ने भूगोल में संभववाद विचारधारा का विकास किया।

ब्रिटिश भूगोलवेत्ता का भी भूगोल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रहा है। इनमें मैकिण्डर का विशेष रूप से योगदान रहा। उन्होंने ऐतिहासिक भूगोल पर अध्ययन एवं चिंतन किया। मैकिण्डर के द्वारा हृदय—स्थल की विचारधारा विकसित किया गया। एण्ड्रयू जे० हरबर्टसन प्रादेशिक भूगोल पर अपना विचार व्यक्त किया।

अमेरिका में भूगोल का वैज्ञानिक अध्ययन 19वीं शताब्दी के में प्रारंभ हो गया था जब जर्मन विद्वानों के निश्चयवादी विचारधारा का प्रसार हो चुका था। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में मध्य तक ईसा बोमैन का प्रमुख स्थान रहा क्योंकि वे स्वतंत्र विचारक थे। 1950 ई० के बाद भूगोल की प्रकृति में बहुत परिवर्तन हुआ। अब इसके अंतर्गत व्यवहारवाद भूगोल का विश्लेषण का अध्ययन किया जाने लगा।

भूगोल का परिभाषा

भूगोल की विभिन्न भूगोलवेत्ता के द्वारा अलग-अलग परिभाषा दिया गया है जो निम्न है—

यूनानी भूगोलवेत्ता **इरेटोस्थनीज** ने सर्वप्रथम पृथ्वी के वर्णन के लिए ज्योग्राफी (Geography) शब्द का प्रयोग किया । उसने पृथ्वी की माप की तथा वह भूगोल का प्रथम अग्रदूत बना। इसलिए उन्हें भूगोल का पिता कहा गया।

18वीं शताब्दी में जर्मन भूगोलवेत्ता **इमैनुअल कांट** ने भूगोल को परिभाषित करते हुए कहा है कि “भूगोल धरातल का अध्ययन करता है तथा यह भूतल के विभिन्न भागों में पाई जाने वाली विभिन्नताओं की पृष्ठभूमि में की गई व्याख्या का अध्ययन करता है।”

19वीं शताब्दी में जर्मन भूगोलवेत्ता **हम्बोल्ट** ने कहा है कि “भूगोल पृथ्वी के वर्णन से संबंधित विद्या है। अन्य सभी प्राकृतिक अथवा जैविक व्यवस्थित विज्ञान पृथ्वी की घटनाओं से संबंधित होते हैं। इन विज्ञानों में व्यवस्थित रूप से पशु, वनस्पति, ठोस पदार्थ या जीवाशेष की बनावट एवं प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है, जबकि भूगोल का अध्ययन किसी क्षेत्र के संदर्भ में उनके पारस्परिक संबंध रूप के संदर्भ में होता है।”

प्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान **विडाल डी ला ब्लाश** ने कहा है कि भूगोल स्थलों का विज्ञान है। जर्मन भूगोलवेत्ता **कार्ल रिटर** ने कहा है कि “भूगोल में पृथ्वी तल पर अध्ययन किया जाता है जो कि मानव का निवासी गृह है।” **हार्टशोर्न** ने कहा है कि “भूगोल के क्षेत्र में भूतल के विभिन्नता रूपों लक्षणों की शुद्ध, व्यवस्थित तथा तर्कपूर्ण व्याख्या करता है।”

भूगोल का विषय क्षेत्र

भूगोल का कार्य क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत रूप से पाए जाते हैं जो निम्नवत है—

- 1) स्थानिक वितरण प्रतिरूप ।
- 2) भूमि तथा उसके निवासियों के मध्य संबंध ।
- 3) प्रदेश में विभिन्न वस्तुओं का वर्तमान वितरण क्यों है? इस तथ्य का विश्लेषण एवं व्याख्या।
- 4) विश्व के भौतिक विभिन्न तथ्यों की वैज्ञानिक दृष्टि से जानकारी।

वर्तमान में भूगोल के उक्त चार परम्परागत कार्यक्षेत्र तो हैं साथ ही साथ भूगोल को एक संश्लेषणात्मक तथा अन्तर्सम्बंधात्मक विषय माना जाता है। इसी कारण भूगोल का अध्ययन अनेक विषयों के विषय क्षेत्रों को परस्पर जोड़ता है । इस विषय में भौतिक विज्ञान, इंजीनियरिंग, सामाजिक विज्ञान के विषय तथा मानवशास्त्र सम्मिलित है। भूगोल वर्तमान में एक ऐसा विज्ञान के रूप में विकसित हो रहा है जिसकी सीमाओं पर स्वतंत्र कई विषय एक दूसरे से अंतःसंबंधित रूप से मिलते हैं।

इसी आधार पर जेम्स एम० फिशर ने भूगोल के विषय क्षेत्र को मुख्य रूप से 3 वर्गों में एवं 13 वर्गों में विभाजित किया है –

- 1) भौतिक भूगोल
- 2) मानव भूगोल
- 3) भौगोलिक तकनीकें

1.) भौतिक भूगोल को पुनः 4 वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

1. भू आकृति विज्ञान
2. जलवायु विज्ञान
3. जैव भूगोल
4. मृदा एवं समुद्र विज्ञान

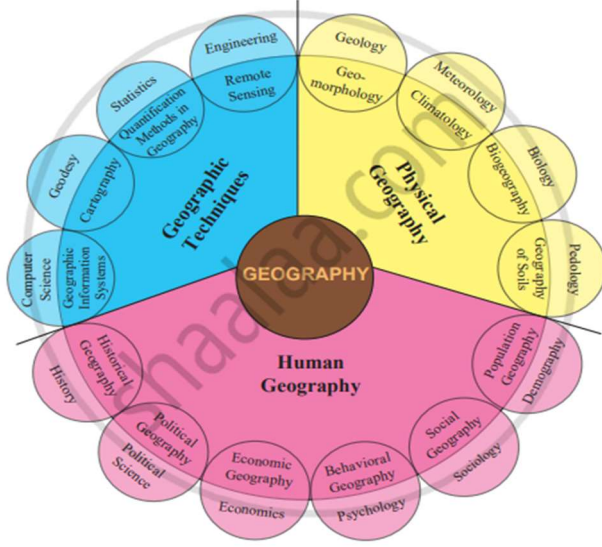
2.) मानव भूगोल को मुख्यतया 5 वर्गों में या शाखा व्यक्त किया जा सकता है

1. जनसंख्या भूगोल
2. आचरण भूगोल
3. आर्थिक भूगोल
4. राजनीतिक भूगोल
5. ऐतिहासिक भूगोल

3.) भौगोलिक तकनीकों को मुख्यतः 4 शाखाओं के रूप में अध्ययन किया जा सकता है—

1. भौगोलिक सूचना प्रणाली
2. मानचित्रकला
3. भूगोल में मात्रात्मक विधियां
4. दूर संवेदन

अतः उपरोक्त विषय क्षेत्रों को चित्र 1.1 के द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।



इस प्रकार से वर्तमान समय में भूगोल का विषय क्षेत्र में व्यवहारवाद भूगोल, मानवतावादी भूगोल, मानव कल्याणकारी भूगोल, मानव पारिस्थितिकी, तंत्र विश्लेषण, सांख्यिकी, कंप्यूटर तंत्र, वायु फोटोग्राफी तथा सुदूर संवेदन आदि को भी सम्मिलित किया जाने लगा है।

निष्कर्ष

भूगोल वह विषय है जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और प्राकृतिक विभाग— जैसे पर्वत, पठार, मैदान, झील, महाद्वीप, देश, नगर, वन आदि का ज्ञान प्रदान करता है। इस प्रकार से भूतल पर पाए जाने वाले भौतिक जैविक तथा मानवीय तत्वों एवं घटनाओं का स्थानीय अध्ययन है।

Q5. Write the contributions of Greek Geographers in Geography ?15

भूगोल में यूनानी भूगोलवेत्ताओं के योगदानों का वर्णन करें ?

उत्तर— भूगोल मानव पर्यावास के रूप में पृथ्वी उसके पर्यावरण मानव— पर्यावरण अन्योन्यक्रिया का विषय है। इसलिए इसके विषयों की जानकारी मानव संस्कृतियों जितनी पुरानी है। आज जिस भूगोल को एक अकादमी विषय के रूप में अध्ययन किया जाता है, वह यूरोपीय विद्वानों के द्वारा रचित है। उसके विकास का मूल— आधार ग्रीकों भूगोलवेत्ताओं का योगदान है। इस प्रकार से यूनानी भूगोलवेत्ताओं में प्रसिद्ध भूगोलवेत्ताओं निम्न है—

1. होमर (900 बी०सी०)
2. थेल्स (700 बी०सी०)
3. अनेग्जीमैण्डर (610—546 बी०सी०)
4. हिकैटियस (520 बी०सी०)

5. हेरोडोटस (485–425 बी०सी०)
6. प्लेटो (428–348 बी०सी०)
7. अरस्तू (384–322 बी०सी०)
8. थियोफ्रेस्टस (370 बी०सी०)
9. इरेटोस्थनीज (276–194 बी०सी०)
10. पौलीबियस (210–128 बी०सी०)
11. हिप्पार्कस (150 बी०सी०)
12. पोसोडोनियस (135–50 बी०सी०)



प्रमुख ग्रीक भूगोलवेत्ता एवं उनके योगदान

पृथ्वी के विभिन्न भागों के पर्यावरण और उनके निवासियों की जीवन पद्धति पर वर्णनात्मक लेखन का आरंभ यूनान में 9वीं शताब्दी ईसा पूर्व में हो गया था। इस क्रम में यूनानी विद्वानों ने भौगोलिक ज्ञान को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिसे अग्रांकित पंक्तियों में इन यूनानी विद्वानों के योगदानों की संक्षिप्त वर्णन किया गया है, जो निम्न है—

1.) होमर (Homer)-

इन्होंने 9वीं शताब्दी में दो महाकाव्यों इलियड और ओडिसी की रचना की थी। इन ग्रंथों में स्थान-स्थान पर स्थानों, जनपदों, पर्यावरणीय दशाओं, मानव वर्गों आदि के भौगोलिक वर्णन मिलते हैं। होमर के विचार से पृथ्वी के सभी ओर समुद्र है और सूर्य प्रतिदिन प्रातः समुद्र से निकलता है और सायंकाल पुनः उसी समुद्री जल में डूब जाता है। इन्होंने विभिन्न दिशाओं से आने वाले हवाओं के बारे में वर्णन किया।

2.) थेल्स (Thales)-

यह एक प्रसिद्ध दार्शनिक और गणितज्ञ थे। जो एजियन सागर के पूर्वी तट पर स्थित मिलेटस नगर का निवासी थे। ईसा पूर्व 580में उसने विश्व की उत्पत्ति और नक्षत्रों के विषय में विचार किया। वह 585 ई०पू० में एक सूर्यग्रहण की शुद्ध भविष्यवाणी के कारण प्रसिद्ध हुआ।

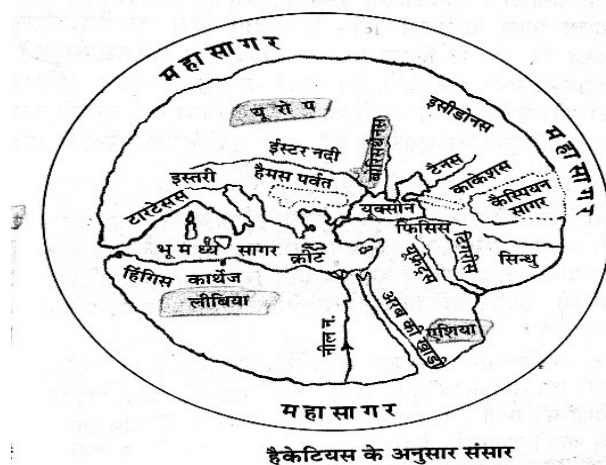
3.) अनेग्जीमैण्डर (Anaximander)-

यह थेल्स का समकालीन था। उसने ब्रह्मांडिकी (Cosmology) को विकसित किया जिसमें ब्रह्मांडोत्पत्ति सिद्धांत व नक्षत्रों के वर्णन है। इन्होंने बताया कि पृथ्वी एक ठोस पिण्ड है इसकी आकृति गोलाकार है। यह ब्रह्मांड के मध्य में स्थित है। इन्हें पृथ्वी का प्रथम मानचित्र बनाने वाला भूगोलवेत्ता कहा जाता है।

प्राचीन बेबिलोनियाँ सभ्यता के नोमोन (Gnomon) अर्थात् सूर्य घड़ी (समतल सहत पर स्थापित लम्बवत् खम्बा जिसकी छाया समय बताती है तथा दोपहर में छाया की दिशा उस स्थान का देशान्तर) का ग्रीक संसार से परिचय करवाया।

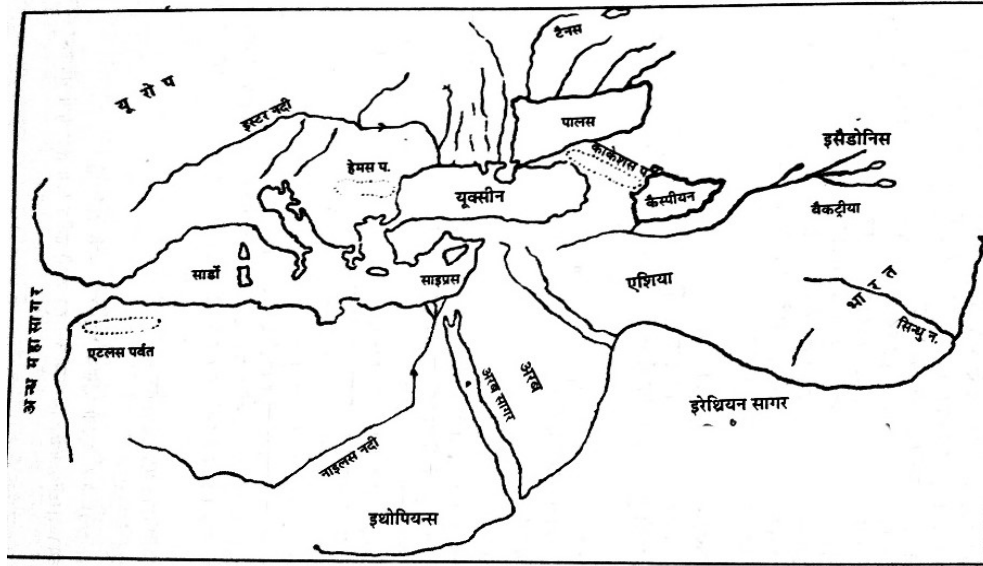
4.) हैकैटियस (Hecataeus)-

इन्होंने संसार के बसे हुए भाग का सामान्य भौगोलिक वर्णन प्रादेशिक आधार पर करके भौगोलिक साहित्य लेखन की परम्परा का आरंभ किया जो उसकी पुस्तक पीरिओडस जेस (Periodus Ges) अर्थात् पृथ्वी का वर्णन से हुआ। हैकैटियस ने संसार का मानचित्र भी बनाया जिसे चित्र 3.1 के द्वारा प्रदर्शित किया गया है। वह पृथ्वी को एक ऐसी वृताकार तश्तरी के समान चपटी (Flat disc-Shaped) मानता था, जिस पर चारों ओर महासागरों का जल भरा हुआ है। उसका यह वर्णन एशिया (मिश्र, इथियोपिया, शेष अफ्रिका) तथा यूरोप (भूमध्यसागरीय तट) दो पुस्तकों में व्यवस्थित है।



5.) हेरोडोटस(Herodotus)-

ये मुख्यतः इतिहास का जनक थे, साथ ही अग्रणी भूगोलवेत्ता भी थे। उसने ऐतिहासिक घटनाओं को भौगोलिक दशाओं की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया। उसका विचार था कि संपूर्ण इतिहास भौगोलिक पृष्ठभूमि में तथा भूगोल को इतिहास के संदर्भ में समझाना चाहिए। उसमें नील नदी के बाढ़ मैदान में जमा हुए काली मृदा का और नदी निक्षेप द्वारा निर्मित डेल्टा का भी सकारण वर्णन किया है तथा माइलेटस (टर्की) के पास मियांडर नदी डेल्टा निर्माण के प्रक्रम को भी बताया।



: हेरोडोटस द्वारा विर्णित संसार

6.) प्लेटो (Plato)-

इन्होंने पृथ्वी को ईश्वरीय रचना माना और बताया कि पृथ्वी का आकार एक संपूर्ण पिण्ड होना स्वाभाविक है। प्लेटो के विचार से ईश्वर ने विश्व की रचना मनुष्य के उपयोग के उद्देश्य से की है और पृथ्वी का निर्माण मनुष्य के कार्यस्थल और उसके गृह प्रदेश के रूप में हुआ है।

7.) अरस्तु (Aristotle) -

यह प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक, तर्कशास्त्री, राजनीतिशास्त्री तथा जैव वैज्ञानिक थे। उसने पृथ्वी की गोलीय आकृति तथा पृथ्वी के कटिबंधों का वर्णन किया। इन्होंने गणितीय भूगोल के विषय में भी उल्लेखनीय योगदान दिया था। अरस्तु का भी विश्वास था कि संसार एक ईश्वरीय रचना है और विश्व में होने वाले सभी परिवर्तन ईश्वरीय नियोजन के ही परिणाम होते हैं।

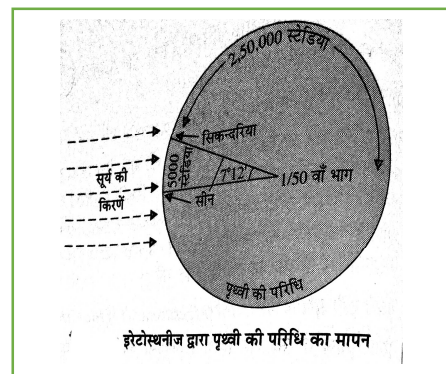
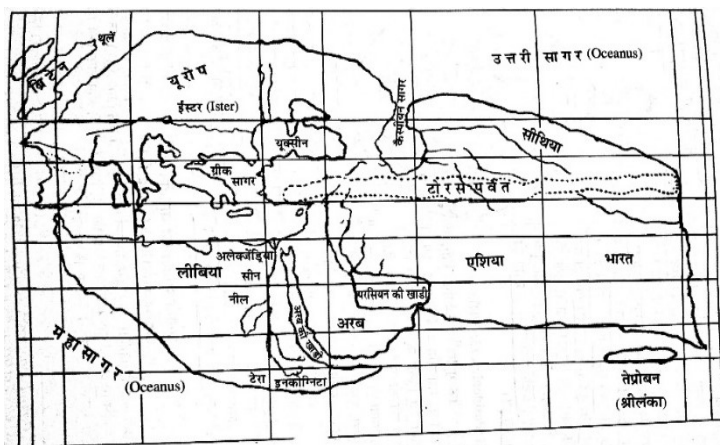
8.) थियोफ्रेस्टस (Theophrastus)-

उन्होंने भूतल पर वनस्पतियों के भौगोलिक वितरण का तुलनात्मक वर्णन किया था। उन्होंने वनस्पति और जलवायु के अंतर्संबंधों का परीक्षण किया और मेसिडोनिया के मैदान, उसके समीपवर्ती पर्वतीय भागों और क्रीट द्वीप की वनस्पतियों का तुलनात्मक वर्णन किया था। इस प्रकार इनका मुख्य कार्य वनस्पति (पादप) भूगोल से संबंधित था।

9.) इरेटोस्थनीज (Eratosthenes)-

इन्हें भूगोल का पिता के नाम से जाना जाता है क्योंकि इन्होंने भूगोल की स्थापना किये थे तथा इन्होंने ही सर्वप्रथम "ज्योग्राफी" भूगोल शब्द का प्रयोग किया था। जिसका अर्थ है पृथ्वी का वर्णनात्मक

अध्ययन। इन्होंने “ज्योग्राफिका” नामक पुस्तक लिखी थी जो प्रथम शास्त्रीय पुस्तक मानी जाती है। इन्होंने पृथ्वी की गणना का करने का प्रयास किया था। इन्होंने पृथ्वी का परिधि मापा।



10.) पोलीबियस (Polybius)-

यह भौतिक भूगोल के क्षेत्र में कार्य किया था। इन्होंने नदियों के अपरदन और निक्षेपण तथा उससे निर्मित स्थलरूपों में बाढ़ का मैदान, डेल्टा आदि के बारे में वर्णन किया था।

11.) हिप्पार्कस (Hipparchus)-

यह एक खगोलशास्त्री थे। इन्होंने नक्षत्रों के वेध के लिए एक चक्रयंत्र का निर्माण किया था। जिसका नाम एस्ट्रोलोब था। इन्होंने पहली बार अक्षांश और देशान्तर रेखाओं के जाल पर मानचित्र बनाया तथा वृत्त को 360° अंशों में बांटा। इन्होंने विषुवत रेखा को पृथ्वी का वृहद वृत्त बताया तथा स्पष्ट किया कि भूमध्य रेखा से उत्तर और दक्षिण की ओर अक्षांश वृत्तों की लंबाई घटती है।

12.) पोसिडोनियस (Poseidonius)-

ये भौतिक भूगोलवेत्ता थे। इन्होंने स्पेन के एक प्राचीन नगर तथा बंदरगाह पर ज्वार-भाटों के अन्वेषण किया और सारडीनिया द्वीप से दूर समुद्र की गहराई को मापा था। उसने क्राउन क्षेत्र में बजरियों (Gravels) की उत्पत्ति को खोजने का प्रयास किया।

इन्होंने समुद्र विज्ञान की एक पुस्तक (The Ocean) भी लिखा तथा पृथ्वी की परिधि का परिकलन भी किया था। इन्हीं की माप के आधार पर ही टॉलमी ने विश्व का मानचित्र बनाया था जिसमें पृथ्वी का आकार वास्तविक से छोटा दिखाया गया।

निष्कर्ष (Conclusion)-

उपरोक्त तथ्यों के व्यवस्थित विवरण से स्पष्ट होता है कि अनेक यूनानी विद्वानों ने भूगोल के विकास में कम या अधिक महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अतः इस काल के यूनानी विद्वानों ने भूगोल का विकास करने के लिए तीन परस्पर संबंधित प्रणालियों

- i. अन्वेषण
- ii. मानचित्रण
- iii. परिकल्पना

का प्रयोग किया था। इस काल में पृथ्वी उसके पर्यावरण एवं उससे मानव के संबंध का अवधारणात्मक विकास हो सका।

Q6. Cast the light on careers in Geography?

(15)

भूगोल विषय में रोजगार प्राप्ति पर प्रकाश डालें ?

उत्तर— भूमिका (Introduction)

करियर (Career) शब्द का प्रयोग अक्सर किसी पेशे, व्यवसाय या व्यापार को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। करियर का एक परिभाषा यह है कि कोई जीने के लिए क्या करते हैं? ऐसे लोग जिनके लिए व्यापक प्रशिक्षण और शिक्षा की आवश्यकता होती है, जिन्हें केवल एक डिप्लोमा और सीखने की इच्छा के साथ प्रदर्शन कर सकते हैं। करियर का मतलब डॉक्टर, वकील, शिक्षक, शोधकर्ता इत्यादि के रूप में करना हो सकता है। हालांकि करियर की एक और परिभाषा भी है। यह किसी के जीवन के कामकाजी वर्षों में उसके द्वारा की गई प्रगति और कार्यों को भी संदर्भित करता है, विशेष रूप से वे उसके व्यवसाय से संबंधित है। यह उसके द्वारा आयोजित विभिन्न नौकरियां, उसके द्वारा अर्जित उपाधियों और उसके द्वारा लंबे समय तक पूरा किए गए कार्यों से युक्त है। जब इस संदर्भ में देखा किया जाता है, तो एक करियर में उसके करियर के विकास से जुड़ी हर चीज शामिल होती है, जिसमें उसकी पसंद या पेशा और उन्नति शामिल है। इसके एकल करियर में कई अलग-अलग रास्ते शामिल हो सकते हैं।

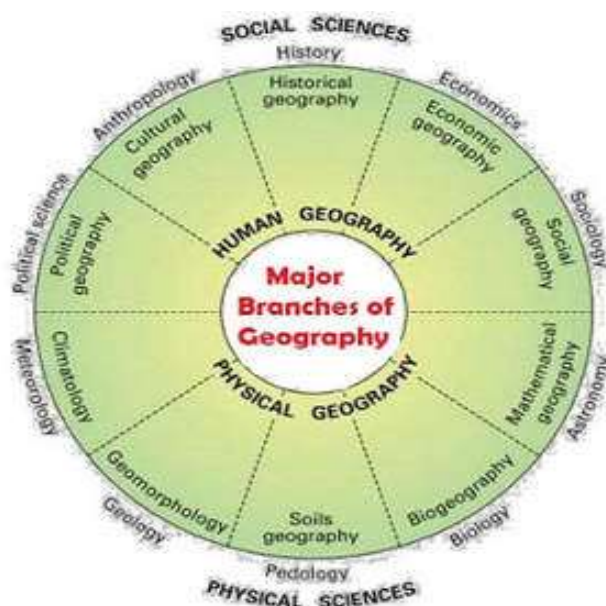
भूगोल एक अतःविषय क्षेत्र है जिसे भौतिक विज्ञान एवं रसायनिक विज्ञान का अध्ययन समग्रतात्मक (Holistic) रूप में किया जाता है। भूगोल एक संश्लेषणात्मक (Synthesis) विषय है जो क्षेत्रीय संश्लेषण का प्रयास करता है तथा यह तो इतिहास, कालिक संश्लेषण का प्रयास करता है।

भौतिक भूगोल की सभी शाखाएं प्राकृतिक विज्ञान की अंतरापृष्ठ (Interface) हैं। परंपरागत भौतिक भूगोल, भौमिकी, मौसम विज्ञान, जल विज्ञान, मृदा विज्ञान से संबंधित है। इस प्रकार भूआकृति विज्ञान, मृदा भूगोल, जलवायु विज्ञान, सामुद्रिक विज्ञान का प्राकृतिक विज्ञान से निकट संबंध है, क्योंकि ये अपनी

सूचनाएं इन्हीं से प्राप्त करते हैं। जैव भूगोल, वनस्पति शास्त्र, जीव विज्ञान तथा परिस्थितिकी विज्ञान से अत्याधिक निकटता से जुड़ा है क्योंकि मानव विभिन्न स्थैतिक निकेत (Niche) में निवास करता है।

प्रत्येक सामाजिक विज्ञान का भूगोल की एक शाखा से अंतरापृष्ठ (Interface) संबंध है। समाजिक विज्ञान के सभी विषय, जैसे समाजशास्त्र, राजनीतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, जनांकिकी, सामाजिक यथार्थता का अध्ययन करते हैं। भूगोल की सभी शाखाएं सामाजिक भूगोल, राजनीति भूगोल, आर्थिक भूगोल, जनसंख्या भूगोल, अधिवास भूगोल आदि विषयों से घनिष्ठता से जुड़े हैं।

भूगोल तथा इसका अन्य विषयों से संबंध



भूगोल पृथ्वी के भौतिक विशेषताओं का वैज्ञानिक अध्ययन है और मानव इन सुविधाओं से कैसे प्रभावित होता है तथा मानव का क्रियाकलाप पृथ्वी को कैसे प्रभावित करता है। भूगोल के छात्र अध्ययन, व्याख्या, मानचित्र बनाने का तरीका, आंकड़ों का संग्रहण तथा उनका विश्लेषण करना, अनुसंधान, योजना एवं परामर्श इत्यादि के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करते हैं। भूमण्डलीकरण, संचार एवं तकनीकी के विकास होने से भूगोल के छात्रों के लिए करियर के नए-नए आयाम खुल गए हैं। ऐसे तो भूगोल के छात्रों के लिए अनेकानेक क्षेत्र करियर के लिए हैं, परंतु यहां उनमें से कुछ क्षेत्रों का विवरण नीचे दिया जा रहा है—

1. **शिक्षण (Teaching)** – भूगोल में विशेषज्ञता वाला शिक्षक छात्रों को पृथ्वी के पर्यावरण और भौतिक संरचनाओं के बारे में पढ़ता है। भूगोल विषय के शिक्षक छात्रों को जिसमें प्राथमिक विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक छात्रों के ज्ञान को समग्रता में पढ़ा सकता है। अनेक

प्रतियोगिता परीक्षा में भूगोल से संबंधित पूछे जाते हैं । ऐसे भूगोल विषय के शिक्षक की मांग बढ़ रही है।

2. **सर्वेयर (Surveyer)** – भूगोल के छात्र सर्वेयर के रूप में भी अपना करियर चुन सकते हैं। भवन निर्माण, जमीन से संबंधित विवाद, या अन्य प्रकार के योजन जैसे— सड़क निर्माण इत्यादि में एक सर्वेक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाता है। भूगोल विषय में भूमि सर्वेक्षण तथा अन्य प्रकार के सर्वेक्षण के संबंध में विस्तार पूर्वक पढ़ाया जाता है।
3. **नगर योजनाकार (Town Planner)** – एक टाउन प्लानर न केवल कस्बों, बल्कि शहरों, गांवों और ग्रामीण क्षेत्रों के प्रबंधन एवं विकास में अपनी अहम भूमिका अदा करते हैं । अपने विश्लेषणात्मक कौशल और पर्यावरण की जानकारी के कारण शहरी नियोजन और डिजाइन में लगे सार्वजनिक और निजी संगठनों और ग्रामीण विकास परियोजनाओं में शामिल और गैर सरकारी संगठन द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। कई विश्वविद्यालय एवं संस्थान नगर नियोजन के विशेष क्षेत्र में पाठ्यक्रम चलाते हैं। उदाहरण के लिए स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्ट (SPA) दिल्ली, डिप्लोमा इन प्लानिंग एंड आर्किटेक्ट (IIM) अहमदाबाद जैसे प्रतिष्ठित संस्थान द्वारा विशेष पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। यहां से निकलने वाले छात्रों की मांग काफी बढ़ जाती है। यहां यह भी बताना आवश्यक है कि भारत के विभिन्न शहरों के लिए एक टाउन प्लानर की आवश्यकता है परंतु जितनी मांग है उतने टाउन प्लानर उपलब्ध नहीं है।
4. **कार्टोग्राफी (Cartographer)** – कार्टोग्राफी में करियर में विभिन्न प्रकार के मानचित्रों के विकास और निर्माण को साथ-साथ से संबंधित आरेख, चार्ट आदि शामिल है। एक मानचित्रकार की भूमिका पुराने नक्शों और ऐतिहासिक दस्तावेजों की बहाली भी शामिल हो सकती है। मानचित्रकार प्रकाशन, सरकार, सर्वेक्षण और संरक्षण सहित विभिन्न क्षेत्रों में काम करते हैं। आज यह क्षेत्र आमतौर पर भौगोलिक सूचना प्रणाली (GIS) और डिजिटल मैपिंग तकनीको जैसी उन्नत तकनीको की एक ऋंखला को भी आकर्षित करता है।
5. **लैंडस्केप आर्किटेक्ट (Landscape Architect)**— लैंडस्केप आर्किटेक्ट अपने डिजाइन ज्ञान और प्राकृतिक दुनिया का उपयोग पार्क, खेल के मैदानों, परिसरों, उद्यानों और अन्य सार्वजनिक स्थानों जैसे बाहरी स्थान बनाने के लिए करते हैं। वे रिक्त स्थान का मापन और विश्लेषण करते हैं और डिजिटल सॉफ्टवेयर का उपयोग करने डिजाइन करके डिजाइन बनाते हैं ।
6. **पर्यावरण सलाहकार (Environmental Consultant)** – पर्यावरण सलाहकार पर्यावरणीय मूद्दों पर सलाह देने के लिए कंपनियों साथ काम करते हैं। वे हरित निर्माण, उचित अपशिष्ट निपटान ओर टिकाऊ ऊर्जा पहलों के लिए दिशानिर्देश विकसित करने के प्रभाव को कम करने में मदद करते हैं । आज पूरी दुनिया पर्यावरण के प्रति सचेत एवं जागरूक हो रही है। अनेक अंतरराष्ट्रीय कंपनियां इन क्षेत्र में काम कर रही है। नए उद्योग की स्थापना हेतु पर्यावरणीय प्रभाव

आकलन (Environmental Impact Assessment) करना आवश्यक हो गया है। ऐसे में भूगोल के छात्रों के लिए क्षेत्र में अत्याधिक मांग बढ़ गई है।

7. **प्रोजेक्ट सलाहकार (Project Consultant)** – नए प्रोजेक्ट हेतु भूमि अधिग्रहण हेतु सामाजिक प्रभाव आकलन (Social Impact Assessment) करना आवश्यक हो गया है। इस क्षेत्र में भूगोल के छात्रों के सामाजिक प्रभाव जानने हेतु उनकी विशेषज्ञता जिसमें वे ग्रामीण सर्वेक्षण का ज्ञान प्राप्त करते हैं, उनकी मांग बढ़ गई है।
8. **जी०आई०एस (G.I.S) विशेषज्ञ** – भौगोलिक सूचना प्रणाली (G.I.S) विशेषज्ञ विशिष्ट शहरों, कस्बों या अन्य क्षेत्रों में जीआईएस डाटा बैस बनाते और बनाए रखते हैं। वे भू-स्थानिक डेटा का विश्लेषण करते हैं। फील्ड डेटा एकत्र करते एवं मानचित्र विकसित करते हैं। इसमें रिमोट सेंसिंग तकनीक एवं सॉफ्टवेयर की सहायता ली जाती है।
9. **टूर गाइड (Tourist Guide)**– विभिन्न प्रकार के पर्यटन के बढ़ने से टूर गाइड की मांग बढ़ गई है। भूगोल के छात्र अपनी ज्ञान के माध्यम से इस क्षेत्र में अच्छा करियर बना सकते हैं।
10. **परिवहन प्रबंधक** ;– परिवहन प्रबंधन यह सुनिश्चित करने के लिए शिपमेंट की भोजन बनाते हैं और निगरानी करते हैं कि उन्हें सुरक्षित जल्दी और आर्थिक रूप से वितरित किया जाता है परिवहन कर्मचारियों की एक टीम का प्रबंधन करते हैं और उनकी यात्रा के समय और आगमन को निर्धारित करते हैं।
11. **आपदा प्रबंधक**– आपदा का प्रबंधन में आपदा के पूर्वानुमान, आपदा के प्रभाव को कम करना एवं आपदा के पश्चात पुर्नस्थापन करना शामिल है। विभिन्न प्रकार के आपदा प्रभावित क्षेत्र की पहचान जिसमें प्राकृतिक आपदा जैसे– बाढ़, सुखा, भूकंप ज्वालामुखी इत्यादी का पहचान करने में एक भूगोल के छात्र बेहतर हो सकता है। इस क्षेत्र में भूगोल के छात्रों को करियर का अवसर उपलब्ध है।
12. **क्षेत्रीय विकास योजनाकर्ता (Regional Development Planner)** – भूगोल के विद्यार्थी किसी भी क्षेत्र के बारे में समग्रता से अध्ययन करता है। अंतः वह एक कुशल क्षेत्रीय विकास प्लानर हो सकता है। सरकारी एवं गैर सरकारी क्षेत्रों में इनकी काफी मांग है। भूगोल के छात्र इस क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि भूमण्डलीकरण, अर्थव्यवस्था एवं तकनीक के विकास के साथ भूगोल विषय के छात्रों के लिए अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। भूगोल विषय के साथ कोई विद्यार्थी अपने करियर को विभिन्न क्षेत्र में अपना सकता है। उपरोक्त उल्लेखित क्षेत्र के अलावे रियल स्टेट मूल्यांकन, भू-राजनीतिक विश्लेषक, निति निमाकर्ता, पर्यावरणविद्, शोधकर्ता, आर्थिक सलहाकार, यात्रा लेखक, बाजार शोधकर्ता इत्यादि अनेक क्षेत्रों में अपना करियर अपना सकता है। अंत में यह कहना अतिशयोक्ति

नही होगा कि भूगोल के विद्यार्थी किसी भी क्षेत्र में अपना करियर अपना सकते जो कि अन्य विषयों के लिए नहीं है।

Q7. Explain the dualism of Physical Geog Vs Human Geog.

(15)

भौतिक भूगोल बनाम मानव भूगोल की द्वैधता की व्याख्या करें?

उत्तर : जब भिन्न विचारधारा के रूप में सैद्धांतिक रूप से समान विषय वस्तु पर दो विपरीत विचार उत्पन्न होती है तो द्वैधता कहलाती है। जर्मन भूगोलवेत्ता बर्नहार्ड वारेनियस(1622–1650 ई.) ने पहली बार भौतिक भूगोल और मानव भूगोल की प्रकृति के मूल अंतर को बताया। इन्होंने अपने पुस्तक "सामान्य भूगोल" (*Geographia generalis, 1650*) के अंतर्गत भूगोल को क्रमबद्ध एवं विशिष्ट भूगोल में विभाजित किया। यह विभाजन ही द्वैतवाद का आधार बना। इसी कारण वारेनियस को द्वैतवाद का जनक भी कहा जाता है।

भूगोल के प्रमुख द्वैतवाद भी भौगोलिक चिंतन के इतिहास तथा भूगोल की प्रकृति को जानने के लिए आवश्यक है—

- i) भौतिक भूगोल तथा मानव भूगोल
- ii) क्रमबद्ध भूगोल तथा प्रादेशिक भूगोल
- iii) आगमनिक विधि तथा निगमनिक विधि
- iv) आइडियोग्राफिक तथा नोमोथेटिक विज्ञान
- v) भूगोल प्राकृतिक विज्ञान तथा कला/सामाजिक विज्ञान
- vi) आधुनिक तथा उत्तर-आधुनिक भूगोल

भौतिक भूगोल तथा मानव भूगोल—

भूगोल में उत्पन्न भौतिक भूगोल तथा मानव भूगोल की द्वैधता स्पष्ट रूप से भूगोल की विषय वस्तु को लेकर था। अर्थात् यह द्वैतवाद इस विषय को लेकर शुरू हुआ कि भूगोल के अंतर्गत भौतिक पक्ष का अध्ययन किया जाए अथवा मानवीय पक्ष का। इसे प्रारंभ करने का श्रेय वारेनियस को जाता है लेकिन जर्मनी एवं फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं द्वारा इसे द्वैतवाद के रूप में विकसित किया गया।

भौतिक भूगोल के पक्षधर जर्मनी के भूगोलवेत्ता थे जिनमें रैटजेल, रेकलस और पेंक प्रमुख हैं। इन्होंने भूगोल के केंद्र में भौतिक भूगोल को स्वीकार किया। इनके अनुसार भूगोल के अंतर्गत भौतिक भूगोल का ही अध्ययन प्रमुखता से किया जाना चाहिए। जर्मनी के बाहर अमेरिका की कुमारी सैंपल ने भौतिक भूगोल को प्रसारित करने का कार्य किया। रैटजेल की एंथ्रोपॉजियोग्राफी, 1882 से पूर्व भूआकृति (*Physiography*), जो बाद में भू-आकृति विज्ञान (*Geomorphology*) कहलाया, का पर्याप्त विकास

हुआ तथा मानव पक्षों की भारी उपेक्षा हुई। एंथ्रोपॉजियोग्राफी की रचना कर मानव भूगोल को अलग अस्तित्व दे दिया तथा 1880 के दशक से भूगोल का भौतिक भूगोल तथा मानव भूगोल में स्पष्ट विभाजन हो गया। यह विभाजन उसके बाद कभी समाप्त नहीं हुआ।

डार्विनवाद के प्राकृतिक कारणों के महत्व के ज्ञान के बाद प्राकृतिक विज्ञानों द्वारा अधिकाधिक सूक्ष्म ज्ञान की तलाश में विषयों तथा उप-विषयों का जन्म होता रहा। विषयों के सूक्ष्म तत्वों के ज्ञान के लिए भूगोल के दोनों बड़े भागों का उप विभाजन हुआ तथा वे विश्व भर में विश्वविद्यालय तंत्र में स्थापित हो गये।

मानव भूगोल के पक्षधर फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता थे जिनमें ब्लॉश, जीन ब्रुश, डिमांजिया तथा फेब्रे प्रमुख हैं। इनके अनुसार भूगोल के केंद्र में मानव भूगोल है और मानव केंद्रित अध्ययन ही भूगोल की विषय वस्तु होनी चाहिए। मानव भूगोलवेत्ताओं के अनुसार भूगोल के अध्ययन का प्रमुख क्षेत्र मानव की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा अन्य गतिविधियां हैं, क्योंकि मानव अपनी आवश्यकता अनुसार प्राकृतिक संसाधनों का तथा विभिन्न क्रियाएं या गतिविधियां करता है।

सॉरवॉन विश्वविद्यालय में 1898 ई. में प्रोफेसर बनने के बाद ब्लॉश ने अपने द्वारा स्थापित पत्रिका **Annales de Geographie** में मानव भूगोल पर जो लेख लिखे वे मानव भूगोल की उसकी प्रसिद्ध पुस्तक **Geography de Humaine, 1921** में प्रकाशित हुआ। मानव भूगोल की ऐसी ही पुस्तकें अमेरिकी भूगोलवेत्ताओं ने लिखीं।

अंततः भूगोलविदों का एक ऐसा समुदाय विकसित हुआ जो भूगोल के भौतिक बनाम मानव नामक द्वैधता की समापन की दिशा में स्पष्टतः प्रयासरत दिखती है। इसी क्रम में हरबर्टसन (1916) कहते हैं कि मानव निवास को उसके निवास्य क्षेत्रों (पर्यावरण) से अलग नहीं किया जा सकता। दोनों ही मिलकर भूगोल को एक संपूर्ण इकाई बनाते हैं। हार्टशोर्न (1959) की भी यही मान्यता है कि भूगोल को भौतिक एवं मानव नामक तथ्यों में विभाजित कर दिया जाए तो संपूर्ण भौगोलिक अध्ययन का अंत हो जाएगा।

भौतिक भूगोल का समर्थक हम्बोल्ट भी थे। उसने अपनी यात्राओं में प्राकृतिक भूगोल और संसाधनों का अध्ययन किया। कार्ल रिटर ने भी अपनी पुस्तक "अर्डकुण्डे" में पृथ्वी सम्बन्धी प्राकृतिक विज्ञान और मानव सम्बन्धी मानव भूगोल की रूपरेखाओं को स्पष्टतः पृथक कर दिया।

निष्कर्ष : —

यह द्वैधता विषय के ऐतिहासिक विकास का परिणाम है। संक्षेप में भूगोल दो वर्गों में विभाजित नहीं है जैसे कि भौतिक और मानव भूगोल वरन् सांतत्यक के दो सिरे हैं। अगर हम भौतिक और मानव घटक को विभाजित करते हैं तो भौतिक घटकों का मानव पर और मानव की क्रियाओं का भूमि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन अधूरा रह जाएगा। इस प्रकार भौतिक और मानव भूगोल में विभाजन भूगोल का

आंिक अध्ययन है। भूगोल के महत्व के लिए भौतिक और मानव तथ्यों के बीच की दरार दूर होनी चाहिए।

Q8. Write short notes on the following.

(15)

(निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें)

a) Geography as discipline. भूगोल एक विषय के रूप में

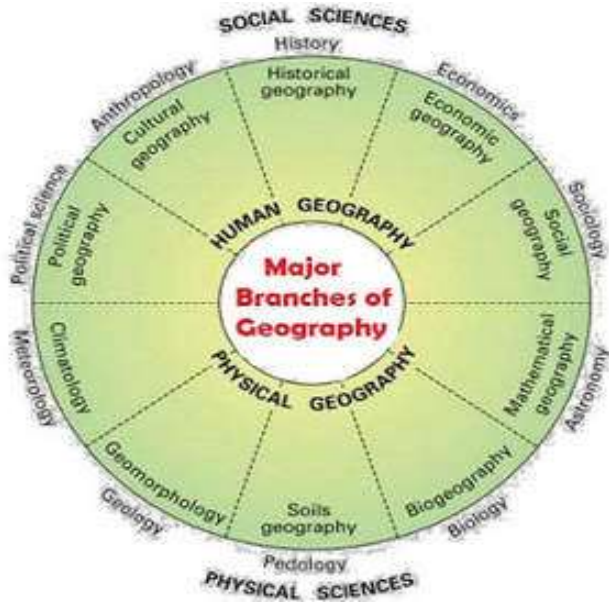
उत्तर:— भूगोल शब्द ग्रीक भाषा के दो मूल 'Geo' (पृथ्वी) एवं 'Graphos' (वर्णन) से प्राप्त किया गया है जिसका अर्थ है— पृथ्वी का वर्णन। पृथ्वी को सदैव मानव के आवास के रूप में देखा गया है और इस दृष्टि से विद्वान भूगोल को "मानव के निवास के रूप में पृथ्वी का वर्णन" परिभाषित करते हैं।

एक विषय के रूप में भूगोल मुख्य रूप से तीन प्रश्नों से संबंधित है—

- **क्या :** कुछ प्रश्न पृथ्वी के धरातल पर पाए जाने वाले प्राकृतिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के प्रतिरूपों की पहचान से संबंधित है।
- **कहाँ :** कुछ अन्य प्रश्न पृथ्वी की भौतिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं के वितरण से संबंधित है।
- **क्यों :** तीसरे प्रकार के प्रश्न सुविधाओं, प्रक्रियाओं और घटनाओं की व्याख्या से संबंधित है। कुछ प्रश्न कौन से तत्व कहाँ स्थित हैं, से संबंधित सूचीबद्ध सूचनाओं से जुड़े हुए होते हैं।

भूगोल एक एकीकृत विषय के रूप में प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञानों से जुड़ा हुआ है। भूगोल के अध्ययन की दो प्रमुख उपागम है— i) क्रमबद्ध उपागम तथा ii) प्रादेशिक उपागम

भूगोल के अंतर्गत मुख्यतः दो शाखा है— **i) भौतिक भूगोल:** यह प्राकृतिक विज्ञान से जुड़ा हुआ है। **ii) मानव भूगोल:** यह सामाजिक विज्ञान से जुड़ा हुआ है।



b) Contribution of Humboldt in Geography भूगोल में हम्बोल्ट का योगदान

- अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट का जन्म 1769 ई. में जर्मनी के बर्लिन शहर में हुआ। इन्हें आधुनिक भूगोल के संस्थापक के रूप में जाना जाता है।
- "कॉसमॉस" (Cosmos) उनकी सर्वाधिक उत्कृष्ट कृति है। इसका प्रकाशन पांच खंडों में 1845–1862 के मध्य हुआ। इसके अंतर्गत उसने भूगोल की विषय वस्तु के क्रम में ही विश्व रचना के लिए "कॉस्मोग्राफी" (Cosmography) नामक शब्द का प्रयोग किया था।
- हम्बोल्ट ने समताप रेखा (Isotherm) के निर्माण एवं विश्व मानचित्र पर इसके प्रयोग का उसने सर्वप्रथम सफल प्रयास किया। इन्होंने समताप रेखा की ऋतुवार परिवर्तन का भी विवरण प्रस्तुत किया।
- हम्बोल्ट ने भूगोल के अध्ययन क्षेत्र में मानव को भी सम्मिलित किया।
- हम्बोल्ट ने भूगोल के अध्ययन के लिए कुछ विधि-तंत्र सुझाए थे –
 - a) सतर्क एवं सुविचारित अवलोकन
 - b) अनुभव-सिद्ध आगमनिक पद्धति
 - c) तुलनात्मक विधि
 - d) शुद्धता
 - e) मानचित्रांकन की विधि
- भौगोलिक अध्ययन विधियों की सुस्पष्टता हेतु हम्बोल्ट ने 7 संकल्पनाओं का प्रतिपादन किया—

- a) भूतल मानव के निवास के रूप में
- b) भूगोल क्षेत्र वितरण विज्ञान के रूप में
- c) सामान्य भूगोल का नाम ही भौतिक भूगोल है
- d) भूगोल संबंधों का विज्ञान है
- e) सांसारिक दृश्य घटनाओं की समझ
- f) दृश्य घटनाओं की विशमांगता
- g) प्रकृति की एकता

- हम्बोल्ट के अनुसार प्रकृति ने अनेकता में भी एकता का प्रदर्शन किया है। यही एकता प्रकृति रचित विभिन्न स्वरूपीय वस्तुओं को आपस में बांधे रखती हैं। अतएव भौतिक भूगोल में तमाम धरातलीय तत्वों की एकरूपता का वर्णन किया जाना चाहिए।
- इन्होंने ज्वालामुखी एवं भूकंप सदृश भू-हलचलों का अनुभव एवं निरीक्षण किया। ज्वालामुखी की उत्पत्ति का संबंध उसने भूतल के कमजोर हिस्सों से बताया।

c) Importance of Remote Sensing in Geography भूगोल में दूरसंवेदन का महत्व

सर्वप्रथम सुदूर संवेदन शब्द का प्रयोग 1960 के दशक में किया गया था। बाद में सुदूर संवेदन की परिभाषा इस प्रकार दी गई "यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जो भूपृष्ठीय वस्तुओं एवं घटनाओं की सूचनाओं का संवेदक युक्तियों के द्वारा बिना वस्तु के संपर्क में आए मापन व अभिलेखन करता है।" इस परिभाषा में मुख्यतः धरातलीय पदार्थ, अभिलेखन युक्तियों तथा ऊर्जा तरंगों के माध्यम से सूचनाओं की प्राप्ति को सम्मिलित किया गया है।

सुदूर संवेदन को दो भागों में वर्गीकृत किया गया है—

- a) सक्रिय सुदूर संवेदन तथा
- b) निष्क्रिय सुदूर संवेदन

इसके महत्व निम्नलिखित हैं—

- मौसम विभाग द्वारा इनके आंकड़ों का उपयोग करके आने वाले मौसम परिवर्तन में और घटनाओं के बारे में जानकारी देता है। जैसे यह पृथ्वी के किसी कोने में चलने वाली किसी खतरनाक हवा या चक्रवात आदि के बारे में शुरू होते ही आगामी हिस्सों को सतर्क कर देते हैं।
- किसी जगह पर या समुद्र में पानी का स्तर या बर्फ की मात्रा आदि का पता भी इन संवेदी उपग्रह द्वारा ही लगाया जाता है।

- किसी शहर, आपातकालीन स्थिति का सर्वे या जानकारी आदि का भी पता लगाया जाता है।
- किसी प्राकृतिक घटनाओं की स्थिति का पता लगाने अर्थात घटना में क्षति आदि सर्वे का पता भी लगाया जाता है।
- सुदूर संवेदन का प्रयोग भू-आवरण, भूमि उपयोग, मृदा संसाधन और कृषि के विकास के लिए किया जाता है।
- यह तकनीक बहुत बड़े क्षेत्र के कवरेज की क्षमता प्रदान करता है। साथ ही यह दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों की सूचना भी सुगमता से प्रदान करता है।
- किसी भी क्षेत्र की निश्चित समयावधि में इमेज प्राप्त करने से परिदृश्य में किसी भी प्रकार के सामयिक परिवर्तन (मानव जनित या प्राकृतिक) का अध्ययन संभव होता है।